दिनांक–21.02.2025

B.A.PART- III HONS. (Philosophy)

शंकर के दर्शन में ब्रह्म

शंकर एकतत्ववादी है। वह ब्रह्म को ही एक मात्र सत्य मानता है। ब्रह्म को छोड़कर शेष सभी वस्तुएँ जगत, ईश्वर सत्य नहीं हैं। उपनिषद के अनुसार ब्रह्म के दो स्वरूप हैं–शब्द, स्पर्श आदि से रहित निर्विवेक, निर्गुण, निराकार, ब्रह्म और गुणों से युक्त सगुण, साकार ब्रह्म। निर्गुण ब्रह्म को परब्रह्म तथा सगुण ब्रह्म को अपर ब्रह्म या ईश्वर कहा गया है। शंकर उपनिषद के समान ब्रह्म के निर्गुण और सगुण भेद को स्वीकार करते हैं। शंकराचार्य केवल इसी निर्गुण ब्रह्म या आत्मा को एकमात्र तत्व मानते हैं, अत: अद्वैतवादी कहलाते हैं।

शंकर ने ब्रह्म के अस्तित्व को प्रमाणित करने हेतु कुछ प्रमाण दिए हैं, जो निम्न हैं–

(1) शंकर के दर्शन का आधार उपनिषद्, गीता तथा ब्रह्म सूत्र है। चूँकि इन ग्रंथों के सूत्र में ब्रह्म के अस्तित्व का वर्णन है, इसलिए ब्रह्म है। इस प्रमाण को 'श्रुति प्रमाण' कहा जाता है।

(2) जगत पूर्णत: व्यवस्थित है। प्रश्न यह उठता है कि इस व्यवस्था का क्या कारण है? इस अवस्था का कारण जड़ नहीं कहा जा सकता। इस व्यवस्था का एक चेतन कारण है। वही ब्रह्म है। इसे प्रयोजनात्मक प्रमाण कहा गया है।

(3) शंकर के अनुसार ब्रह्म सब की आत्मा है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आत्मा के अस्तित्व का अनुभव करता है। इससे प्रमाणित होता है कि ब्रह्म का अस्तित्व है। इस प्रमाण को 'मनोवैज्ञानिक प्रमाण' कहा गया है।

(4) ब्रह्म के अस्तित्व का सबसे प्रबल प्रमाण अनुभूति है। वह अपरोक्ष अनुभूति के द्वारा जाना जाता है। अपरोक्ष अनुभूति के फलस्वरूप सभी प्रकार के द्वैत समाप्त हो जाते हैं और अद्वैत ब्रह का साक्षात्कार होता है। तर्क या बुद्धि से ब्रह्म का ज्ञान असंभव है क्योंकि वह तर्क से परे है। इसे 'अपरोक्ष अनुभूति प्रमाण' कहा गया है।

(5) ब्रह्म ब्रह धातु से बना है जिसका अर्थ है बुद्धि। ब्रह्म ही से सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति हुई है। जगत के आधार के रूप में ब्रह्म की सत्ता प्रमाणित होती है। यह 'तात्विक प्रमाण' कहा गया है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com